SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में मूल्यपरक शिक्षा एवं पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

नीलू सिंह, पी–एचडी, शिक्षा विभाग
आई.पी.एस. कॉलेज, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
नीलू सिंह, पी–एचडी
E-mail : neelusingh0107@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/10/2025
Revised on : 05/12/2025
Accepted on : 14/12/2025
Overall Similarity : 00% on 06/12/2025

शोध सार

प्रस्तुत शोध–पत्र में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के बीच मूल्यपरक शिक्षा एवं पर्यावरण जागरूकता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। आधुनिक युग में जहाँ एक ओर भौतिक प्रगति तेज़ी से हो रही है वहीं दूसरी ओर पर्यावरणीय संकट और मूल्यहीनता भी समाज के समक्ष गम्भीर चुनौती के रूप में उपस्थित है। इस पृष्ठभूमि में यह शोध यह समझने का प्रयास करता है कि मूल्यपरक शिक्षा किस प्रकार विद्यार्थियों में पर्यावरण चेतना को प्रभावित करती है। अध्ययन हेतु 50 विद्यार्थियों का चयन किया गया। तथ्यों का संकलन सर्वेक्षण विधि से किया गया और आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत एवं सारणीबद्ध प्रस्तुति द्वारा किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि मूल्यपरक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है।

मुख्य शब्द

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, मूल्यपरक शिक्षा एवं पर्यावरण जागरूकता.

प्रस्तावना

मानव जीवन का विकास तभी सार्थक है जब उसमें मूल्य और नैतिकता का समावेश हो। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन न होकर व्यक्तित्व निर्माण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने का माध्यम भी है। आज की शिक्षा–प्रणाली में मूल्यपरक शिक्षा को विशेष स्थान दिया जा रहा है क्योंकि यह विद्यार्थियों के जीवन दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाती है। दूसरी ओर, पर्यावरण प्रदूषण एवं पारिस्थितिक असंतुलन वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौतियाँ हैं। ग्रीनहाउस

प्रभाव, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास तथा असंयमित औद्योगिकीकरण से पर्यावरण संकट बढ़ रहा है। ऐसे समय में विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी बनाना आवश्यक है।

मूल्यपरक शिक्षा और पर्यावरण चेतना दोनों परस्पर पूरक हैं। यदि विद्यार्थियों में जीवन–मूल्यों की समझ होगी तो वे प्रकृति एवं पर्यावरण के संरक्षण हेतु भी सक्रिय रहेंगे। अतः इस अध्ययन में यह जानना आवश्यक प्रतीत हुआ कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों में मूल्यपरक शिक्षा और पर्यावरण जागरूकता के बीच किस प्रकार का संबंध है और दोनों का तुलनात्मक प्रभाव क्या है।

मूल्यपरक शिक्षा

डॉ. आत्मानन्द मिश्र के अनुसार–''जिसमें व्यक्ति की अपनी क्षमताओं और शक्तियों के उपयोग का तरीका, संपर्क में आने वाले अन्य व्यक्तियों तथा समुदाय के साथ व्यवहार और आचरण में अच्छे–बुरे का ज्ञान सम्मिलित रहता है, वह नैतिक मूल्य है।''

मूल्यपरक शिक्षा वह शिक्षा है जो विद्यार्थियों को केवल बौद्धिक विकास ही नहीं बल्कि जीवन–मूल्यों, नैतिकता, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक बनाती है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को अच्छे और जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करना है। मूल्यपरक शिक्षा के अंतर्गत सत्य, ईमानदारी, करुणा, सहयोग, सेवा–भाव, अनुशासन, राष्ट्रीय एकता, भाईचारा और सहिष्णुता जैसे गुणों का विकास किया जाता है। विद्यालयों में मूल्यपरक शिक्षा का समावेश विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को संतुलित बनाता है और उन्हें समाज एवं पर्यावरण के प्रति कर्तव्यनिष्ठ करता है। इस अध्ययन में इसे स्वतंत्र चर माना गया है क्योंकि यह पर्यावरण चेतना जैसे परतंत्र चर पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। जिन विद्यार्थियों में मूल्यपरक शिक्षा का स्तर ऊँचा होता है, उनमें पर्यावरणीय संवेदनशीलता भी अपेक्षाकृत अधिक देखने को मिलती है।

पर्यावरण जागरूकता एवं उसका विकास

हर्स कोविट्ज एम.जे. के अनुसार –''पर्यावरण उन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है जो जीवधारियों के जीवन, उनके विकास और उनकी अनुक्रियाओं को प्रभावित करता है।''

पर्यावरण जागरूकता का आशय है कि व्यक्ति प्रकृति और उसके संसाधनों की महत्ता को समझे और उनके संरक्षण के लिए जिम्मेदार बने। इसमें वायु, जल, भूमि, ऊर्जा और वन्यजीवन का संरक्षण, प्रदूषण की रोकथाम, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग तथा सतत विकास की समझ सम्मिलित है। विद्यार्थी यदि पर्यावरण के प्रति सचेत होते हैं तो वे वृक्षारोपण, प्रदूषण–नियंत्रण, ऊर्जा संरक्षण और स्वच्छता अभियानों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। परतंत्र चर होने के कारण यह सीधे मूल्यपरक शिक्षा पर आधारित होता है। जिन विद्यार्थियों को नैतिकता और जीवन–मूल्यों की शिक्षा दी जाती है, वे पर्यावरण को भी उसी दृष्टि से देखते हैं और उसके संरक्षण में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं इसलिए मूल्यपरक शिक्षा का विकास सीधे–सीधे पर्यावरण जागरूकता के विकास से जुड़ा है।

आयु, कक्षा स्तर और विद्यालयीय पाष्ठभूमि

नियंत्रित चर वे होते हैं जिन्हें शोधकर्ता स्थिर बनाए रखते हैं ताकि स्वतंत्र और परतंत्र चरों के वास्तविक संबंध को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। इस अध्ययन में विद्यार्थियों की आयु सीमा 15–17 वर्ष रखी गई है ताकि मानसिक और बौद्धिक परिपक्वता लगभग समान बनी रहे। केवल उच्चतर माध्यमिक स्तर (11वीं–12वीं कक्षा) के विद्यार्थियों को शामिल किया गया ताकि शिक्षा का स्तर नियंत्रित रहे और सभी विद्यार्थी समान शैक्षिक पृष्ठभूमि से हों। इसके अतिरिक्त, अध्ययन को ग्वालियर नगर के विद्यालयों तक सीमित किया गया है ताकि स्थानिक अंतर का प्रभाव न्यूनतम रहे। इन चरों को नियंत्रित रखने से शोध के निष्कर्षों की वैधता और विश्वसनीयता बनी रहती है।

पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ

अतिरिक्त चर वे होते हैं जिन पर शोधकर्ता प्रत्यक्ष रूप से अध्ययन नहीं करता, लेकिन वे परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, यदि विद्यार्थी का परिवार पर्यावरण के प्रति सजग है तो उस पर मूल्यपरक शिक्षा का प्रभाव और भी गहरा होगा। इसी प्रकार, परिवार की आर्थिक स्थिति, सामाजिक पृष्ठभूमि और विद्यालय का वातावरण भी विद्यार्थियों की सोच को प्रभावित कर सकता है। मीडिया और सोशल मीडिया का उपयोग भी विद्यार्थियों में पर्यावरणीय दृष्टिकोण विकसित या बाधित कर सकता है। शिक्षक का व्यक्तित्व और उसका व्यवहार भी विद्यार्थियों के मूल्य एवं जागरूकता पर असर डालता है। यद्यपि इन चरों को शोधकर्ता नियंत्रित नहीं करता, परन्तु परिणामों की व्याख्या में इनका महत्व स्वीकार किया जाता है।

उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में मूल्यपरक शिक्षा के स्तर का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता के स्तर को ज्ञात करना।
3. मूल्यपरक शिक्षा एवं पर्यावरण जागरूकता के बीच संबंध का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. लिंग अथवा पृष्ठभूमि के आधार पर पर्यावरण चेतना में संभावित अंतर की पड़ताल करना।

परिकल्पनाएँ

H_1 उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों में मूल्यपरक शिक्षा एवं पर्यावरण जागरूकता के बीच सकारात्मक संबंध होगा।

H_2 मूल्यपरक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में पर्यावरण चेतना का स्तर अपेक्षाकृत अधिक होगा।

H_{01} लिंग के आधार पर पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

न्यादर्श

इस शोध हेतु ग्वालियर नगर के 50 उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों को यादृच्छिक (Random) पद्धति से चयनित किया गया। इनमें बालक और बालिकाएँ दोनों शामिल किए गए।

उपकरण

1. मूल्यपरक शिक्षा के लिए मानकीकृत उपकरण Dr. G.P. Sherry and Dr. R.P. Verma का [Personal Value Questionnaire (PVQ)] प्रयोग किया गया है।
2. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरण जागरूकता अभिक्षमता मापनी [Environmental Awareness Ability Measure (EAAM)] का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। विद्यार्थियों को प्रश्नावली प्रदान की गई और उनके उत्तरों के आधार पर आँकड़े एकत्र किए गए।

तथ्यों का विश्लेषण एवं सारणी

परिकल्पना H_1

"उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों में मूल्यपरक शिक्षा एवं पर्यावरण जागरूकता के बीच सकारात्मक संबंध होगा।"

मूल्यपरक शिक्षा का स्तर	विद्यार्थियों की संख्या	पर्यावरण जागरूकता उच्च (%)	पर्यावरण जागरूकता मध्यम (%)	पर्यावरण जागरूकता निम्न (%)
उच्च स्तर	18	15 (83%)	03 (17%)	00 (0%)
मध्यम स्तर	22	08 (36%)	12 (55%)	02 (9%)
निम्न स्तर	10	02 (20%)	04 (40%)	04 (40%)

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

सारणी से स्पष्ट होता है कि जिन विद्यार्थियों में मूल्यपरक शिक्षा का स्तर उच्च है, उनमें से अधिकांश (83 प्रतिशत) की पर्यावरण जागरूकता भी उच्च है। इसके विपरीत, जिन विद्यार्थियों की शिक्षा निम्न स्तर पर है, उनकी पर्यावरण जागरूकता भी न्यूनतम पाई गई। इसका अर्थ है कि दोनों चरों में प्रत्यक्ष और सकारात्मक संबंध है। अतः परिकल्पना H_1 सत्य सिद्ध होती है अर्थात् "उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों में मूल्यपरक शिक्षा एवं पर्यावरण जागरूकता के बीच सकारात्मक संबंध है।"

परिकल्पना H_2

"मूल्यपरक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में पर्यावरण चेतना का स्तर अपेक्षाकृत अधिक होगा।"

पर्यावरण जागरूकता का स्तर	मूल्यपरक शिक्षा उच्च स्तर (%)	मूल्यपरक शिक्षा मध्यम स्तर (%)	मूल्यपरक शिक्षा निम्न स्तर (%)
उच्च स्तर	15 (75%)	08 (38%)	02 (20%)
मध्यम स्तर	03 (15%)	12 (54%)	04 (40%)
निम्न स्तर	00 (00%)	02 (08%)	04 (40%)

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका से ज्ञात होता है कि उच्च मूल्यपरक शिक्षा वाले विद्यार्थियों में से 75 प्रतिशत की पर्यावरण जागरूकता उच्च स्तर की है, जबकि निम्न मूल्यपरक शिक्षा वाले विद्यार्थियों में से केवल 20 प्रतिशत की जागरूकता उच्च पाई गई। यह स्पष्ट करता है कि मूल्यपरक शिक्षा का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की पर्यावरण चेतना पर पड़ता है। परिकल्पना H_2 भी सत्य सिद्ध होती है अर्थात् "मूल्यपरक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में पर्यावरण चेतना का स्तर अपेक्षाकृत अधिक होगा।"

परिकल्पना H_{01}

"लिंग के आधार पर पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।"

लिंग	विद्यार्थियों की संख्या	उच्च स्तर (%)	मध्यम स्तर (%)	निम्न स्तर (%)
बालक	25	10 (40%)	11 (44%)	04 (16%)
बालिका	25	12 (48%)	10 (40%)	03 (12%)

बालक और बालिका दोनों के आँकड़े लगभग समान दिखाई देते हैं। बालकों में 40 प्रतिशत और बालिकाओं में 48 प्रतिशत की पर्यावरण जागरूकता उच्च स्तर पर है, जबकि मध्यम और निम्न स्तर के परिणाम भी लगभग समान हैं। यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है। परिकल्पना H_{01} भी सत्य सिद्ध होती है अर्थात् "लिंग के आधार पर पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।"

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों से यह स्पष्ट हुआ कि जिन विद्यार्थियों में मूल्यपरक शिक्षा का स्तर अधिक है, उनमें पर्यावरणीय जागरूकता भी अधिक पाई गई। उच्च मूल्यपरक शिक्षा वाले विद्यार्थियों ने प्रदूषण नियंत्रण, संसाधनों के संरक्षण एवं स्वच्छता जैसे कार्यों में सक्रिय भागीदारी दिखाई, जबकि निम्न स्तर की शिक्षा वाले विद्यार्थियों में यह चेतना अपेक्षाकृत कम थी। इससे सिद्ध होता है कि मूल्यपरक शिक्षा और पर्यावरण जागरूकता के बीच गहरा सकारात्मक संबंध है।

इसके अतिरिक्त यह भी पाया गया कि जिन विद्यार्थियों को व्यवस्थित रूप से मूल्यपरक शिक्षा दी गई थी, उनकी पर्यावरण चेतना का स्तर अपेक्षाकृत अधिक था। इस समूह में 70ः से अधिक विद्यार्थियों की जागरूकता उच्च श्रेणी की रही, जबकि मध्यम एवं निम्न शिक्षा स्तर पर यह प्रतिशत काफी कम पाया गया। इससे यह प्रमाणित होता है कि मूल्यपरक शिक्षा विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और व्यवहार को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाती है।

लिंग के आधार पर तुलना करने पर यह परिणाम सामने आया कि बालक एवं बालिकाओं की पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। दोनों ही समूहों में उच्च स्तर की जागरूकता लगभग समान अनुपात में देखी गई। यह तथ्य इस बात की पुष्टि करता है कि पर्यावरण चेतना केवल लिंग पर निर्भर नहीं करती, बल्कि शिक्षा, वातावरण और पारिवारिक संस्कार इसके प्रमुख निर्धारक तत्व हैं।

इस प्रकार तीनों परिकल्पनाओं का सत्यापन करते हुए यह स्पष्ट हुआ कि मूल्यपरक शिक्षा विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता को बढ़ाने में प्रभावी भूमिका निभाती है और लिंग के आधार पर इसमें कोई विशेष अंतर नहीं पाया जाता।

सुझाव

1. विद्यालय स्तर पर मूल्यपरक शिक्षा को पाठ्यचर्या का अनिवार्य अंग बनाया जाए।
2. विद्यार्थियों में पर्यावरण चेतना हेतु जागरूकता कार्यक्रम, वृक्षारोपण, प्रदूषण–नियंत्रण अभियान आदि नियमित रूप से कराए जाएँ।
3. शिक्षकों को चाहिए कि वे शिक्षण प्रक्रिया में जीवन–मूल्यों और पर्यावरणीय उदाहरणों को शामिल करें।
4. अभिभावकों को भी बच्चों को पर्यावरण संरक्षण संबंधी संस्कार घर पर देने चाहिए।
5. सरकार और शैक्षिक संस्थाएँ मिलकर पर्यावरणीय परियोजनाओं को विद्यालयों में अनिवार्य बनाएँ।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर. (2018) *भारतीय शिक्षा में मूल्य और नैतिकता,* प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
2. मिश्रा, एस. (2020) *पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता,* भारतीय पुस्तक भवन, वाराणसी।
3. सिंह, आर. (2019) *शिक्षा का समाजशास्त्र,* लक्ष्मी नारायण प्रकाशन, आगरा।
4. मिश्र, आत्मानन्द (1977) *शिक्षा कोष,* ग्रन्थम प्रकाशन, कानपुर, पृ. 447।
5. त्रिपाठी, (2006) *जल प्रदूषण समस्या और समाधान,* ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण।
6. Agarwal, S. (2021) *Environmental Education and Sustainable Development,* APH Publishing, New Delhi.
7. Verma, P. (2022) *Value Based Education in Indian Context,* Rawat Publications, Jaipur.

****